आरती संग्रह

आरती संग्रह

प्रमुख देवी-देवताओं की आरतियों का अनुपम संग्रह

(रंगीन चित्रों सहित)

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए

आरती को 'आरात्रिक' अथवा 'आरार्तिक' और 'नीराजन' भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में अज्ञानतावश यदि कोई कमी रह जाए, तो आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में भी वर्णन आया है--

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे।।

अर्थात, मंत्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से पूजन में पूर्णता आ जाती है। साधारणतः पाँच बत्तियों अथवा कपूर जलाकर, शंख घन्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए। आरती करते समय सर्वप्रथम भगवान् की प्रतिमा के चरणों में उसे पांच बार घुमाएं व दो बार नाभि देश में, दो बार मुखमण्डल पर और सात बार समस्त अंगो पर घुमाएं। जिसका आशय यही है कि भगवान की प्रतिमा सम्पूर्ण रूप से प्रकाशित हो जाये तथा उपासक उनका भली भाँति दर्शन कर सकें। यथार्थ में आरती, पूजन के अन्त में इष्टदेवता की प्रसन्नता व उनकी बलैया लेने के लिए की जाती है।

विषय सूची

आरती क्या है?	2	आरती सालासर बाला जी	41
आरती श्री गणेश जी की	5	आरती श्री खाटूश्याम जी	43
आरती ॐ जय जगदीश	7	आरती श्री विश्वकर्मा जी	45
आरती श्री त्रिगुण जी की	9	आरती श्री शनिदेव जी	47
आरती श्री शिव जी की	11	आरती श्री साईंबाबा जी	49
आरती श्री कुंज बिहारी	13	आरती श्री भैरव जी की	50
आरती श्री हनुमान जी की	15	आरती श्री तुलसी जी की	51
आरती श्री अम्बे जी की	17	आरती श्री नर्मदा जी	52
आरती श्री दुर्गा जी की	19	आरती सोमवार की	53
आरती श्री लक्ष्मी जी की	21	आरती मंगलवार की	54
आरती श्री सरस्वती जी	23	शांति पाठ	55
आरती श्री गायत्री जी की	25	आरती बुधवार की	56
आरती श्री संतोषी माता	26	आरती बृहस्पतिवार की	57
आरती श्री ज्वाला-काली	29	आरती शुक्रवार की	58
आरती श्री गंगा जी की	31	आरती शनिवार की	59
आरती श्री सत्यनारायण	33	आरती रविवार की	60
आरती श्री रामचन्द्र जी	35	णमोंकार महामंत्र	61
श्री राम स्तुति	36	गायत्री महामंत्र	62
आरती श्री रामायण जी	37	महामृत्युंजय मंत्र	63
आरती मेंहदीपुर बाला जी	39	क्षमाप्रार्थना	64

आरती श्री गणेश जी की

सदा भवानी दाहिनी गौरी पुत्र गणेश।
पांच देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करे सेवा ।।जय०।।
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी ।।जय०।।
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।।जय०।।
पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा
सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा ।।जय०।।
दीनन की लाज राखो शम्भु-सुत वारी
कामना को पूरा करो जग बलिहारी ।।जय०।।

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बू फलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपाद पंकजम्।।

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जै जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे।ॐ।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।प्रभु।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।ॐ।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।प्रभु।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी।ॐ।
तुम हो पूर्ण परमात्मा, तुम अर्न्तयामी।प्रभु।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।ॐ।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।प्रभु।
मैं मूर्ख खल कामी, कृपा करो भर्ता।ॐ।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।प्रभु।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।ॐ।
दीनबन्धु दुःख हरता, तुम ठाकुर मेरे।प्रभु।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा मैं तेरे।ॐ।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।प्रभु।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।ॐ।
श्री जगदीश जी की आरती, जो कोई नर गावे।प्रभु।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे।ॐ।

आरती श्री त्रिगुण जी की

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा,.
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा।ॐहरहर.।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे,.
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे।ॐहरहर.।
दो भुज चार चर्तुभुज दश भुज ते सोहे,.
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे।ॐहरहर.।
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी,.
त्रिपुरारि कंसारी करमाला धारी।ॐहरहर.।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे,.
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।ॐहरहर.।
कर मध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता,.
जगकरता जगहरता जगपालन करता।ॐहरहर.।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,.
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनो एका।ॐहरहर.।
त्रिगुण शिव की आरती जो कोई नर गावे,.
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।ॐहरहर.।

आरती श्री शिव जी की

शीश गंग अर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखरासी।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर राग रागिनी मधुरासी।।
यक्ष-रक्ष-भैरव जहँ डोलत, बोलत हैं वन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुंजा सी।।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिन जहँ डोलत करत दुग्ध की वर्षा सी।।
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त सम हिमराशी।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित सेवत सदा प्रकृति दासी।।
ऋषि-मुनि देव दनुज नित सेवत, गान करत श्रुति गुणराशी।
ब्रह्मा-विष्णु निहारत निसिदिन कछु शिव हमकूँ फरमासी।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर नित सत् चित् आनँदराशी।
जिनके सुमिरत ही कट जाती कठिन काल-यम की फाँसी।
त्रिशूलधरजी का नाम निरंतर प्रेम सहित जो नर गासी।
दूर होय विपदा उस नर की जन्म-जन्म शिवपद पासी।।
कैलासी काशी के वासी अविनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरनन को अपनो जान कृपा कीजो।।
तुम तो प्रभु जी सदा दयामय अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमाकर शंकर किंकर की विनती सुनियो।।

आरती श्री कुंजबिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की, श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की। (टेक)
गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला
। श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चन्द्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी थी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनकों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दावन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग दोष जाके निकट न झाँके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सीयारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारे।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई, तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि।।

आरती श्री अम्बे जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ।जय अम्बे।
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको ।जय अम्बे।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।जय अम्बे।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ।जय अम्बे।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ।जय अम्बे।
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ।जय अम्बे।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ।जय अम्बे।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।जय अम्बे।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ।जय अम्बे।

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता।जय अम्बे।
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।जय अम्बे।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।जय अम्बे।
श्री अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावै।जय अम्बे।

सर्वमंगल मांगलये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते॥
जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥
या देवि सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः॥

आरती श्री दुर्गा जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
तेरे भक्तजनों पर माता, भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो मां, करके सिंह सवारी।।
सौ सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती ।ओ मैया...
माँ-बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत-कपूत सुने हैं पर न, माता सुनी कुमाता।।
सब पे करुणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती ।ओ मैया...
नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना।
हम तो मांगे तेरे चरणों में, छोटा सा इक कोना।।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती ।ओ मैया...
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरद हस्त सर पर रख दो, माँ संकट हरने वाली।।
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती ।ओ मैया...

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु विधाता।।ओ३म्।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तू ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ।।ओ३म्।।
दुर्गा रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यवात ऋद्धि-सिद्धि पाता ।।ओ३म्।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।।ओ३म्।।
जिस घर में तुम रहती, तहँ सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।।ओ३म्।।
तुम बिन यज्ञ न होते, बरत न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ।।ओ३म्।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।।ओ३म्।।
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।

आरती श्री सरस्वती जी की

आरती कीजे सरस्वती जी की,
जननि विद्या बुद्धि भक्ति की ।टेक।
जाकी कृपा कुमति मिट जाए,
सुमिरन करत सुमति गति आये,
शुक सनकादिक जासु गुण गाये,
वाणि रूप अनादि शक्ति की ।।आरती।।
नाम जपत भ्रम छुटें हिय के,
दिव्य दृष्टि शिशु खुलें हिय के।
मिलहि दर्श पावन सिय पिय के,
उड़ाई सुरभि युग-युग कीर्ति की ।।आरती।।
रचित जासु बल वेद पुराणा,
जेते ग्रन्थ रचित जगनाना।
तालु छन्द स्वर मिश्रित गाना,
जो आधार कवि यति सति की ।।आरती।।
सरस्वती की वीणा वाणी कला जननि की।

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना॥

आरती श्री गायत्री जी की

आरती श्री गायत्री जी की ।।टेक।।
ज्ञान दीप और श्रद्धा की बाती,
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी की।।आरती०।।
मानव की शुचि थाल के ऊपर,
देवी की जोति जगै जहं नीकी।।आरती०।।
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा बाजै,
करैं पूरी आसहु हिय की।।आरती०।।
जाके समक्ष हमें तिहुं लोक की,
गद्दी मिले तबहूं लगे फीकी।।आरती०।।
आरती प्रेम सों नेम सो जो करि,
ध्यावहि मूरति ब्रह्म लली की।।आरती०।।
संकट आवैं न पास कबौ तिन्हें,
सम्पदा और सुख की बन लीकी।।आरती०।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

आरती श्री संतोषी माता जी की

जय संतोषी माता जय संतोषी माता,
अपने सेवक जन की सुख संपत्ति दाता।।जय।।
सुन्दर चीर सुनहरी माँ धारण कीन्हो,
हीरा पन्ना दमके तन श्रंगार लीन्हो।।जय।।

गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे,
मन्द हँसत करुणामयी त्रिभुवन मन मोहे।।जय।।
स्वर्ण सिंहासन बैठी चंवर ढुरे प्यारे,
धूप दीप नैवेद्य मधुमेवा भोग धरे न्यारे।।जय।।
गुड़ अरु चना परमप्रिय तामें संतोष कियो,
संतोषी कहलाई भक्तजन वैभव दियो।।जय।।
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही,
भक्त मण्डली छाई कथा सुनत जोही।।जय।।
मन्दिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई,
विनय करें हम बालक चरनन सिर नाई।।जय।।
भक्ति-भाव मय पूजा अंगीकृत कीजे,
जो मन बसे हमारे इच्छाफल दीजे।।जय।।
दु:खी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किये,
बहु धन-धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये।।जय।।
ध्यान धरो जाने तेरो मनवांछित फल पायो,
पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो।।जय।।
शरण गये की लज्जा रखियो जगदम्बे,
संकट तू ही निवारे दयामयी माँ अम्बे।।जय।।
संतोषी माँ की आरती जो कोई जन गावे,
ऋद्धि-सिद्धि सुख संपत्ति जी भरके पावे।।जय।।

आरती श्री ज्वाला-काली देवी जी की

'मंगल' की सेवा, सुन मेरी देवा! हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान-सुपारी, ध्वजा-नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।।
सुन जगदम्बे न कर बिलंबे संतनके भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जै काली कल्याण करे।
।।१।। टेक।।

'बुद्ध' विधाता तू जगमाता मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण-कमलका लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे।।
जब-जब भीर पड़े भक्तनपर तब-तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली•।।२।।

'गुरु' के बार सकल जग मोह्यो तरुणीरूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग करे।।
'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली•।।३।।

ब्रह्मा विष्णु महेस फल लिये भेंट देन तव द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी मात सिर सोनेका छत्र फिरे।।
वार 'शनिचर' कुंकुम बरणी, जब लुंकड़पर हुकुम करे।
संतन प्रतिपाली•।।४।।

खड्ग खपर त्रैशूल हाथ लिये रक्तबीजकूँ भस्म करे।
शुंभ निशुंभ क्षणहिमें मारे महिषासुरको पकड़ दले।।
'आदित' वारी आदि भवानी जन अपनेका कष्ट हरे।
संतन प्रतिपाली• ।।५।।

कुपित होय कर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखौ दयारूप हो, पलमें संकट दूर टरे।।
'सोम' स्वभाव धर्‍यो मेरी माता जनकी अर्ज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली• ।।६।।

सात बारकी महिमा बरनी सब गुण कौन बखान करे।
सिंहपीठपर चढ़ी भवानी अटल भवनमें राज्य करे।।
दर्शन पावें मंगल गावें सिध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली• ।।७।।

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करैं आरती चमर कुबेर डुलाय करे।।
जय जननी जय मातु भवानी अचल भवनमें राज्य करे।
संतन प्रतिपाली• ।।८।।

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे ॥

आरती श्री गंगा जी की

ओ३म् जय गंगे माता, श्री गंगे माता।
जो नर तुमको ध्यावत, मनवांछित फल पाता।। ओ३म् जय...
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।। ओ३म् जय...
पुत्र सगर के तारे, सब जग की ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुखदाता।। ओ३म् जय...
एक ही बार जो तेरी, शरणागति आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता।। ओ३म् जय...
आरती मात तुम्हारी, जो जन नित्य गाता।
दास वही सहज में, मुक्ति को पाता।। ओ३म् जय...

आरती श्री सत्यनारायण जी की

जय श्री लक्ष्मीरमणा, जय श्री लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा।।जय।।
रत्न जटित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजै।।जय।।
प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दर्श दियो।
बूढ़ों ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो।।जय।।
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी।।जय।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं।।जय।।
भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धरयो
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो।।जय।।
ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी।।जय।।
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।।जय।।
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्दस्वामी मनवांछितफल पावे।।जय।।

आरती श्री रामचन्द्र जी की

आरती कीजै श्री रघुबर की। सतचित आनँदशिव सुन्दर की।। टेक।।
दशरथ-तनय कौसिला-नन्दन, सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन।
अनुगत भक्त भक्त-उर-चन्दन, मर्यादा पुरुषोत्तम वरकी।।
निर्गुन-सगुन, अरूप-रूपनिधि, सकललोक-वन्दित विभिन्न विधि।
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि, मायारहित दिव्य नर-वरकी।।
जानकिपति सुराधिपति जगपति, अखिल लोक पालक त्रिलोक गति।
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति, एकमात्र गति सचराचर की।।
शरणागत-वत्सल व्रतधारी, भक्त कल्पतरु वर असुरारी।
नाम लेत जग पावनकारी, वानर-सखा दीन-दुख-हरकी।।

श्रीरामचन्द्र रघुपुंग व राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवत: शरणागतोऽस्मि॥

श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम्।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुता-वरम्।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकन्दनम्।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचन्द्र दशरथ-नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर-दूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम्।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरू सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

आरती श्री रामायण जी की

आरती श्री रामायण जी की,
कीरति कलित ललित सिय पी की।। टेक।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद,
बाल्मीकि विज्ञान विशारद।
सुक सनकादि शेष अरु शारद
बरनि पवन सुत कीरति नीकी ।।१।।
गावत वेद पुरान अष्टदस,
छओ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस ।
मुनि जन धन संतन को सरबस,
सार अंस सम्मत सब ही की ।।२।।
गावत संतत संभु भवानी,
अरु घट सम्भव मुनि बिग्यानी।
व्यास आदि कवि बर्ज बखानी,
कागभुसुण्डि गरुड़ के ही की ।।३।।
कलिमल हरनि विषय रस फीकी,
सुभग, सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव भूरि अमी की,
तात मात सब विधि तुलसी की ।।४।।

आरती मेंहदीपुर बाला जी की

ॐ जय हनुमतवीरा स्वामी जय हनुमतवीरा।
संकट मोचन स्वामी, तुम हो रणधीरा।।ॐ।।
पवन पुत्र अंजनी सुत, महिमा अति भारी।
दु:ख दारिद्र मिटाओ, संकट भय हारी।।ॐ।।
बाल समय में तुमने, रवि को भक्ष लियो।
देवन स्तुति कीन्ही, तब ही छोड़ दियो।।ॐ।।
कपि सुग्रीव राम संग, मैत्री करवाई।
बालीबली मराये कपीशहि, गद्दी दिलवाई।।ॐ।।
जारि लंक सिय-सुधि ले आए, वानर हर्षाये।
कारज कठिन सुधारे, रघुवर मन भाये।।ॐ।।
शक्ति लगी लक्ष्मण के, भारी सोच भयो।
लाय संजीवन बूटी, दु:ख सब दूर कियो।।ॐ।।
ले पाताल अहिरावण, जबहि पैठि गयो।
ताहि मारि प्रभु लाये, जय जयकार भयो।।ॐ।।
घाटे मेंहदीपुर में शोभित, दर्शन अति भारी।
मंगल और शनिश्चर, मेला है जारी।।ॐ।।
श्री बालाजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत इन्द्र हर्षित, मनवांछित फल पावे।।ॐ।।

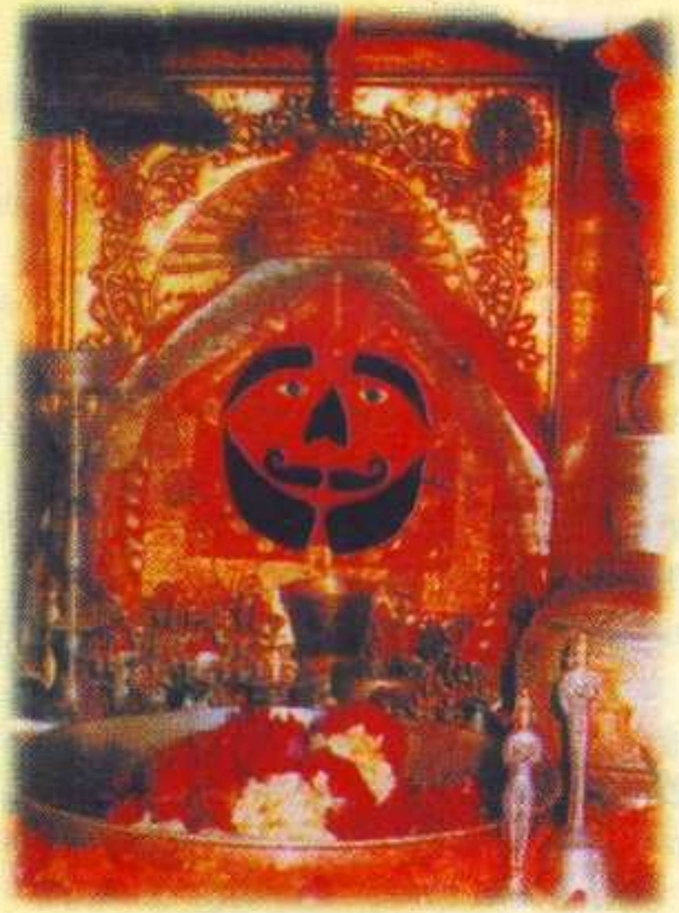

आरती सालासर बाला जी की

जय श्री बालाजी, महाराज, अनोखी तिहारी झांकी।
जय श्री घोटे वाले हनुमान, अनोखी तिहारी झांकी।
तिहारे सिर पै मुकुट बिराजे, कानों में कुण्डल साजै।
गले बिराजै अनुपम हार, अनोखी तिहारी झांकी।
तिहारे नैन सुरमा साजै, माथे पै तिलक विराजै।
मुख में नागर पान लगा है, अनोखी तिहारी झांकी।
तेरे हाथ में लड्डू साजै, दूजे में ध्वजा विराजै।
बाबा या छवि की बलिहारी, अनोखी तिहारी झांकी।
तिहारे अंग में चोला साजै, ऊपर से बर्क विराजै।
बाबा रोम रोम में राम, अनोखी तिहारी झांकी।
जब लक्ष्मण मूर्छित पाये, तुम संजीवन बूटी लाये।
बाबा लीनी पहाड़ उठाय, अनोखी तिहारी झांकी।
जब रावण मार गिरायो, तब राज्य विभीषण पायो।
सीता लाये साथ लिवाय, अनोखी तिहारी झांकी।
दूर-दूर से यात्री आवें, तेरे चरणों में शीश नवावें।
बाबा उनकी लज्जा राख, अनोखी तिहारी झांकी।
बाबा दुनिया करे पुकार, दुखिया खड़े हैं तेरे द्वार।
बाबा कर दे मेरा बेड़ा पार, अनोखी तिहारी झांकी।
दु:खियों के दु:ख तू दे टार, हो रहा है मंगलाचार।
जै जै श्री बालाजी महाराज, अनोखी तिहारी झांकी।
मैं दुखिया तेरे दर आया, आकर अपना कष्ट सुनाया।
कर दो मेरा बेड़ा पार, अनोखी तिहारी झांकी।

आरती श्री खाटूश्याम जी की

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।।ॐजय।।
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर दुरे।
तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।।ॐजय।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।।ॐजय।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।।ॐजय।।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे।
भक्त आरती गावे, जय जयकार करे ।।ॐजय।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचरे।।ॐजय।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई गावे।
कहत आलूसिंह स्वामी, मनवांछित फल पावे ।।ॐजय।।
तन मन धन सब कुछ है तेरा, बाबा सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ।।ॐजय।।
जय श्री श्याम हरे, बाबा जी श्री श्याम हरे।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे ।।ॐजय।।

आरती श्री विश्वकर्मा जी की

ओ३म् जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक श्रुति धर्मा।।१।। ॐ जय..
आदि सृष्टि में विधि को, श्रुति उपदेश दिया।
जीवन मात्र का जग में, ज्ञान विकास किया।।२।। ॐ जय..
ऋषि अंगिरा ने तप से, शान्ति नहीं पाई।
ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्ध आई।।३।। ॐ जय..
रोग ग्रस्त राजा ने, जब आश्रय लीना।
संकट-मोचन बन कर, दूर दुःख कीना।।४।। ॐ जय..
जब रथकार दम्पति, तुमरी टेर करी।
सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी।।५।। ॐ जय..
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
द्विभुज, चतुर्भुज, दसभुज, सकल रूप साजे।।६।। ॐ जय..
ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे।
मन दुविधा मिट जावे, अटल शान्ति पावे।।७।। ॐ जय..
'श्री विश्वकर्मा जी' की आरती जो कोई नर गावे।
कहत गजानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे।।८।। ॐ जय..

आरती श्री शनिदेव जी की

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी।।जय जय ..
श्याम अंग वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी।।जय जय ..
क्रीट मुकुट शीश राजित दिपत है लीलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी।।जय जय ..
मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी।।जय जय ..
देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी।
विश्नाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी।।जय जय ..

॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः ॥

ॐ निलांजनं समाभासं रवि पुत्रम् यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्डसंभूतम् तम् नमामि शनैश्चरम्॥

॥ ॐ प्रां प्री प्रौं सः शनये नमः ॥

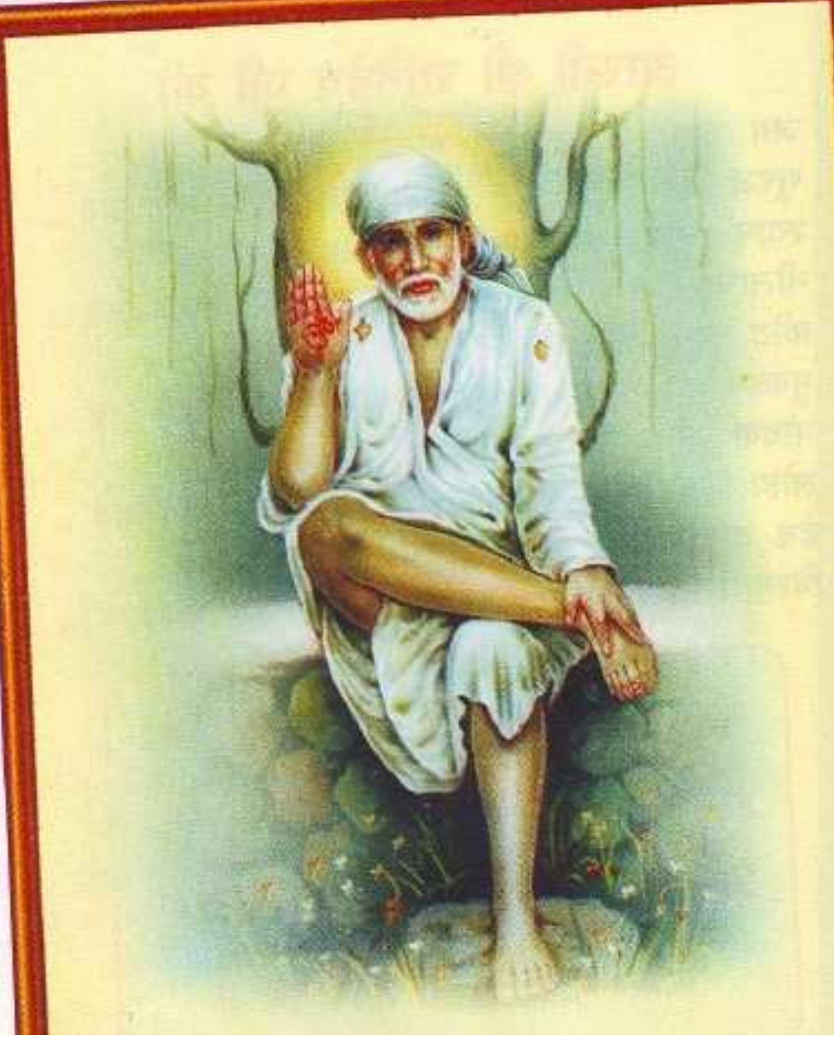

आरती श्री साईंबाबा जी की

आरती साईबाबा। सौख्यदातार जीवा। चरणरजातलीं। द्यावा दासां विसांवा, भक्तां विसांवा।।आ.घ्रु.।। जालुनियां अनंग। स्वस्वरूप राहे दंग। मुमुक्षुजनां दावी। निज डोलां श्रीरंग आ.।।१।। जया मनीं जैसा भाव। तयातैसा अनुभव। दाविसी दयाघना। ऐसी तुझी ही माव।। आ.।।२।। तुमचें नाम ध्यातां हरे संसृतिव्यथा। अगाध तव करणी। मार्ग दाविसी अनाथा।।आ.।।३।। कलियुगीं अवतार। सगुणब्रह्म साचार। अवतीर्ण झालासे। स्वामी दत्त दिगंबर द०।।आ०।।४।। आठां दिवसां गुरुवारी। भक्त करिती वारी। प्रभुपद पहावया। भवभय निवारी। आ० ।।५।। माझा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरजसेवा मागणें हेंचि आतां। तुम्हां देवाधिदेवा। आ०।।६।। इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निजसूख। पाजावें माधवा या। साभाल आपुली।।भाक आ० ।।७।।

ॐ साई श्री साईं जय जय साईं।

ॐ साईं श्री साईं जय जय साईं।

आरती श्री भैरव जी की

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
जय काल और गौरा देवी कृत सेवा।। जय...
तुम्हीं पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुख कारक भीषण वपुधारक।। जय...
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशुल धारी।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी।। जय...
तेल बिन देवा सेवा सफल नहीं खोवे।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख होवे।। जय...
तुम चटकि दधि मिश्रित माषबलि तेरी।
कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी।। जय...
पावं घुंघुरू बाजत डमरू डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक जन मन हर्षावत।। जय...
बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे।। जय...

आरती श्री तुलसी जी की

जय तुलसी माता, जय तुलसी माता।
सब जग की सुखदाता वर दाता।। जय...
सब योगों के ऊपर सब रोगों के ऊपर।
रज से रक्षा करके, भव त्राता।। जय...
बहुपुत्री हे श्यामा, सुर वल्ली है ग्राम्या।
विष्णुप्रिय जो तुमको सेवे सोनर तर जाता।। जय...
हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित।
पतितजनों की तारिणी तुम हो विख्याता।। जय...
लेकर जन्मविजन में, आई दिव्य भवन में।
मानव लोक तुम्हीं से सुख सम्पत्ति पाता।। जय...
हरि को तुम अति प्यारी श्यामवर्ण सुकुमारी।
प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता।। जय...

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
चिनोमि केशवस्यार्थे वरदा भव शोभने॥
त्वदंगसम्भवैः पत्रैः पूजयामि यथा हरिम्।
तथा कुरु पवित्रांगि! कलौ मलविनाशिनि॥

आरती श्री नर्मदा जी की

जय जगदम्बा - जय नर्मदा भवानी।
निकसी जलधार जोर पर्वत पाताल फोर।।
छटा छवि आनन्द वरन कवि सुर फनिन्द।
काटत जम द्वन्द्व फन्द देत रजधानी।।
भूषण वस्त्र शुभ विशाल चन्दन की खोर।
भाल मनो राव पर्वकाल तेज ओ बखानी।।
देत मुक्ति परमधाम गावत तो आठों याम।
दुविधा जात महाकाम ध्यावत जो प्राणी।।
ध्यावत अज सुर सुरेश पावत नहीं पार।
गावत नारद गणेश पण्डित मुनि ज्ञानी।।
संयम सागर मझधार में जल उदधि अहंकारि।
उदर फारत निकारी धार ऊपर नित छहरानी।।
अष्ट भुजा वाल अखण्ड नव द्वीप।
नौ खण्ड महिमा मात तुम जानी।।
देके दर्शन प्रसाद रखो माता मर्जाद।
दास गंग करे आरती, वेद मति बखानी।।

आरती सोमवार की

आरती करत जनक कर जोरे,
बड़े भाग्य रामजी घर आये मोरे।।टेक
जीत स्वयंवर धनुष चढ़ाये ।
सब भूपन के गर्व मिटाये।।
तोरि पिनाक किये दुई खण्डा ।
रघुकुल हर्ष रावण भय शंका।।
आई है सीता संग सहेली ।
हरषि विरखि वर माला फेरी।।
गज मोतियन के चौक पुराये ।
कनक कलश भरि मंगल गाये।।
कंचन थार कपूर की बाती ।
सुर नर मुनि जन आये बराती।।
फिरत भाँवरें बाजा बाजे ।
सिया सहित रघुबीर बिराजे।।
धनि-धनि राम लखन दोऊ भाई ।
धनि दशरथ कौशल्या माई।।
राजा दशरथ जनक विदेही ।
भरत शत्रुघन परम सनेही।।
मिथिलापुर में बजत बधाई ।
दास मुरारी स्वामी आरती गाई।।

आरती मंगलवार की

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता।मंगल मंगल देव अनन्ता।।
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे। कांधे मूंज जनेऊं साजे।।
शंकर सुवन केशरी नन्दन। तेज प्रताप महा-जग बन्दन।।
लाल लंगोटा लाल दोऊ नैना। पर्वत सम फारत सेना।।
काला अकाल जुद्ध निलकारी। देश उजारत क्रुद्ध अपारी।।
राम दूत अतुलित बलधमा। अंजनी पुत्र पवनसुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
भूमि पुत्र कंचन बरसावें। राजपाट पुर देस दिवावें ।।
शत्रु न काट-काट महि डारैं। बंटन व्याधि विपत्ति निवारैं ।।
आपन तेज सम्हारौ आपै। तीनों लोक हांकते कापै ।।
सब सुख लहैं तुम्हारी शरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
तुमरे भजन सकल संसारा। दया करो सुख दृष्टि अपारा।।
राम दण्ड कालहु को दण्डा। तुमरे पर सिहोत सत खण्डा।।
पवन पुत्र धरनी के पूता। दोउ मिल काज करो अद्‌भुता।।
हम प्राणी सरनागति आये। चरण कमल रज सीस नवाये।।
रोग शोक बहु विपत्ति छिराने।दारिद्र दुःख बन्ध प्रकटाने।।
तुम तजि और न मेटन हारा। दोऊ तुम हो महावीर अपारा।।

दारिद्र दहन, हरन छ ण त्रासा।करो रोग दुःख दुःस्वप्न विनासा।।
शत्रुन करो चरन के चेरे।तुम स्वामी हम सेवक तेरे।।
विपत्ति हरन मंगलमय देवा। अंगीकार करो यह सेवा।।
मुदित भक्त विनती यह मोरि। देव महाधन लाल करोरी ।।

।। दोहा ।।

श्रीमंगल जी की आरती। हनुमत सहित जु गाई।।
होत मनोरथ सिद्ध सब। अन्त विष्णुपुर जाई।।

शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष ॐ शान्तिः
पृथ्वी शान्तिः रापः शान्तिः रोषधयः
शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवा
शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व ॐ शान्तिः
शान्तिःरेव शान्तिः सामा शान्तिःरेधि
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!

आरती बुधवार की

आरती युगल किशोर की कीजै,
तन मन धन न्यौछावर कीजै ।टेक।
गौर श्याम मुख निरखत रीझे,
हरि को स्वरूप नयन भरि पीजै।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा,
ताहि निरखि मेरा मन लोभा।
ओढ़े नील पीत पट सारी,
कुंज बिहारी गिरवर धारी।
फूलन की सेज फूलन की माला,
रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला।
मोर मुकुट मुरली कर सोहे,
नटवर कला देखि मन मोहे।
कंचन थार कपूर की बाती,
हरि आये निर्मल भई छाती।
श्री पुरुषोत्तम गिरवरधारी,
आरती करें सकल ब्रजनारी।
नन्द नन्दन वृष भानु किशोरी,
परमानन्द स्वामी अविचल जोरी।

आरती बृहस्पतिवार की

ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा।
छिन छिन भोग लगाऊं फल मेवा।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
जगतपिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी।।
चरणामृत निज निर्मल, सब पालन हर्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता।।
तन मन धन अर्पण कर जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े।।
दीन दयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता, भव बन्धन हारी।।
सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारो।
विषय विकार मिटाओ, सन्तन सुखकारी।।
जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे।
जेष्ठानन्द बन्द सो सो निश्चय पावे।।

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वराय:।
गुरूर्साक्षात् परब्रह्मं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आरती शुक्रवार की

आरती लक्ष्मण बालजती की,
असुर संहारन प्राणपति की।टेक।

जगत जोति अवधपुर राजै, शेषाचल पे आप विराजे।
घंटा ताल पखावज बाजे, कोटि देव मुनि आरती साजै।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजे, तीन लोक जाकी शोभा राजै।
कंचन थाल कपूर सुहाई, आरती करत सुमित्रा माई।
आरती कीजै हरि की तैसी, ध्रुव प्रहलाद विभीषण जैसी।
प्रेम मगन होय आरती गावै, बसे बैकुण्ठ बहुरि नहि आवै।
भक्ति हेतु लाड लडावै, जन घनश्याम परम पद पावै।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहा शान्ति कराभवन्तु॥

आरती शनिवार की

आरती कीजै नरसिंह कुँवर की,
वेद विमल यश गाऊँ मेरे प्रभु जी।टेक।

पहली आरती प्रहलाद उबारे, हिरनाकुश नख उदर बिदारे।
दूसरी आरती वामन देवा, बलि के द्वारे पधारे हरिदेवा।
तीसरी आरती ब्रह्म पधारे, सहसबाहु के भुजा उखारे।
चौथी आरती असुर संहारे, भक्त विभीषण लंक पधारे।
पांचवी आरती कंश पछारे, गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले।
तुलसी को पत्र कंठ मणि हीरा, हरषि निरखि गावै दास कबीरा।

नीलद्युति शूलधारं किरीटिनं
गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं
वन्दे सदाभीष्टकरं वरेण्यम्॥

आरती रविवार की

कहँ लगि आरती दास करेंगे,
सकल जगत जाकी जोति विराजै।
सात समुद्र जाके चरणनि बसे
कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम।
कोटि भानु जाके लख की शोभा,
कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम।
भार अठारह रोमावलि जाके,
कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।
छप्पन भोग जाके प्रतिदिन लागें,
कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।
अमित कोटि जाके बाजा बाजैं,
कहा भयो झनकार करे हो राम।
चार वेद जाके मुख की शोभा,
कहा भयो ब्रह्मवेद पढ़े हो राम।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक,
नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम।
हिम मन्दार जाको पवन झकोरें,
कहा भयो शिव चंवर ढुरे हो राम।
लख चौरासी योनि छुड़ाये,
केवल हरियश नामदेव गायो।

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं।

अर्थः- अरिहंतो को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और इस लोक के सभी साधुओं को नमस्कार हो।

णमोकार मंत्र का महत्व

एसो पंच णमोकारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं।।

अर्थः-यह पंच णमोकार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है। इसके पढ़ने से हर प्रकार का मंगल होता है।

गायत्री महामन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयातः

शब्दार्थः ओ३म् -सर्व रक्षक परमात्मा
भूः - प्राणों से प्यारा
भुवः - दुख विनाशक
स्वः - सुखस्वरूप है
तत् - उस
सवितुः - उत्पादक, प्रकाशक,प्रेरेक
देवस्य - देव के
वरेण्यं - वरने योग्य
भर्गोः - शुद्ध विज्ञान स्वरूप का
धीमहि - हम ध्यान करें
धियो - बुद्धियों को
यो नः - जो हमारी
प्रचोदयात् - शुभ कार्यों में प्रेरित करें ।

भावार्थ :- उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

महामृत्युन्जय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

शब्दार्थः- हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जावे जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जावें।

मन्त्र लाभः- * यह मंत्र जीवन प्रदान करता है।
(अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)

* यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है।
* इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना।
* यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।